

रा-गे
गी

परीते राजसिख कृत विष्णुके ॥५॥ विगलित
वसनं परिहृत रशाने चटय जचने मणिताने
किसलय शायने पंकज नयने निधि मिवहर्ष
नित्याने । ६ । हरि रमि मानी रजति दिदानी मि
य मणियाति विश्रमम् ॥ ऊरु मम वचने स
त्वर रचने हरय मय रिषकामे । ७ ॥ श्री जयदे

शेकित भवउपयानम् ॥ रचयति शायने सच
कित नयने पश्यति तव पस्यानम् ॥ ३ ॥ म
त्वरमथीरे त्यज मेजीरे दिष्ट मिव केलि सुलोले
चल सखि केंजे सति मिर पुंजे शील य नील
निचोलम् ॥ ४ ॥ अस्मिन्मारे रूप हित हारे च
न श्व तरल वलाके ॥ तरि दिव पीतेरति वि

रागो
गी

समस्त सभगाः सत्त्वामश्वत्थैव कृतार्थता
म॥७॥ हाय वली तरल कांचन कांचिदाम
मेजीर कंकण मणि कृति दीपितम् ॥ हारे
निजेजतिलयस्य हरीं निरीक्ष्य व्रीडा वतीम्
य सखी निजगाद यथाम् ॥ ६८॥ रागो
थाद नाल ॥ ३॥ अष्टपदी ॥ ॥ मेज तर

व कृत हरि सेवे भगति परमाणीयम् ॥ प्रस
दित हृदये हरि मयि सदये नमन सकृत् क
सनीयम् ॥ ६ ॥ राग गंधार ताल ॥ ३ ॥ श्लोक
समय चकिते विसृजेती दृशेति मिर पथि
प्रति कृतं मङ्गः स्थित्वा मन्द पदानि वितन्वे ।
नी कथमपि इहः प्राप्ता मेरी रनेगी नरेगिभिः

रा.गं.
गी.

लस रति वलितललित गीते । ४ । वितत वद्ध व
लि नव पल्लव चने । विलस विर मल सपीन
जचने । ५ । मथु सदित मथुप कुल कलित रा
दे । विलस सदत रस सरस भावे ॥ ६ ॥ मथुर
नर पिक तिकरति नद सावरे । विलस दश
न रुचि रुचिर शिखरे ॥ ७ ॥ विहिन पद्मा ।

केजलल केलि सदने विलस रति रभ सहसित
वदने ॥१॥ प्रविश राधे माधव समीप मिह न
व भवद शोक दल सायन सोरे । विलस कच
कलशा तदल सोरे ॥२॥ कसम चय रचित सु
चि वास मोहे ॥ विलस कसम सकुमार देहे
॥३॥ चल मलय वन पवन हरभि शीते वि

रा-गो-
मी-

य वेदा महे । ६४ ॥ अहमिह निवसामि या हि
राया अननय सद्वचने चानयेयाः ॥ इति म
युविषणा सावीतिशक्ता स्वय मिद मेत्य अ
सर्जगाद वायम । ७० । त्वाचितेन चिरे बहेन
य सति श्रोतो भटशेतापितः केदर्येणाचपा
न मिच्छति सथा सम्वाथ विवा यरम ॥ अ

वती साव समाजे ॥ भणति जयदेव कविगज
राजे ॥ ६ ॥ अष्टपदी ॥ राग गंधार ताल ॥ ३ ॥
श्लोक ॥ सात्वा नंद प्रेदरा दिदि विषहृदै रमेदा
दरा दानमै रंजुदेद नील माणिभिः सदाशीतेदी
वरम ॥ खलेदमकरेद सदागलनात्दा कि
नी मेडरे श्री गोविंद पदार विंद मशुभस्कंदा

शुभो
गी

नर नारयति नयोः ॥ तदानीं राधायाः प्रिय
नमः समालोक समये यथात स्वेदास्य प्रम
र यिव हर्षाच्च निकरः ॥ १३ ॥ भजेत्या स्तल्यो
ने कृत कण्ट कया इति विहितः मिने याने
गोहा हर्षिव हिताली परिजने ॥ प्रियाये
यशेणाः स्वर शर समा कृत सभगम्

स्यो कंत दले करुतण मिह भूतेप लक्ष्मी लव
क्रीते दास श्वोष सेवित पदो भोजे कृतः संभ
सः ॥ ७१ ॥ सास साधससा नेद गोविंदे लो
ल लोचन सिंजान मंज मंज मंजीरे प्रविवे
श निवेशतम ॥ ७२ ॥ अति क्रम्या णोरो प्रव
ण पथ पर्यंत गमन प्रवासे नैवात्तणो सत्तल

रागा
गी

इषे वषे वद वदन मनेग विकारें ॥ हार ममल
तर नार सरसि दथते एरिलेव्य विहरम ॥
झुट तर फेन कदम्ब करेवित मिव यमना
जल हरम ॥ २ ॥ श्यामल मडल कलेवर मे
डल मथि गान गौर डहलम ॥ नीलनलि
न मिव पीत पगा पटल भरवल यित मू

सलजाया लजा वगमदिव हरे मया दृशः ॥ २४ ॥
याया मेथार ताल ॥ ३ ॥ अष्टपदी ॥ राधावद
न विलोकन विकसित विविध विकार वि
भंगम् । जल निधि मिव विश्व मेडल दर्शन
तरलित तेरा तरेगाम ॥ ५ ॥ हरि मेकर स
विर मभि ललित विलासम् ॥ सादृशं यरु

श-गे-
गी

किरणा छुरितो दरजल थर सेंदर सकसमके
शे निमिरो दित विथ सेंदल निर्मल मलयज
निलक निवेशे । ६ । विपुल पुलक भरदेतारि
ते शति केलिकला भिरथीरे । मणि गणकिर
ण समूह समज्वल भूषण स्वभग शरीरम
७ ॥ श्रीजयदेव भणित विभव दिशणी ह

ले॥३॥ तरल दृग्वल चलन मनोहर वदनम
नित्यरति श्याम । स्फट कमलोदर विलित
विजत श्यामिव शरदिन श्याम॥४॥ वदन
कमल परिशीलन मिलित मिश्रि सम केद
ल शोभन॥ स्मित रुचि कसम समलसि
ताथर पलव कृत रति लोभन॥५॥ शशि ।

रा.गो.
गी.

सर्वोच्च हरिः प्रियाम् ॥ राग गंधार ताल ॥ ३ ॥ अष्ट
पदी ॥ किशलय शयने तले करु कामिनि च
रण कमल विनिवेशे ॥ तव पद पल्लव वैरण
राभव मिद मन भवत ह वैशाम् ॥ १ ॥ क्षणमथ
ना नाययान् मन्त्रयत मनुभव राधिके ॥ अद-
कर कमलेन करोति चरण मन्त्रायाग मिता ।

न भूषण भारे ॥ प्रणमत हृदि विनिधाय हरिं
सर्विरे सकृतो दयसांरे ॥ ६ ॥ प्रष्टुपदी ॥ गग
शेयारतात् ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ गतवति सखी हे
दे मेदत्रया भरतिर्भर सर पर वशाकृतस्फी
तस्मिन् स्नायिता ययाम ॥ सरस मलसे दृष्टा
दृष्टा मूर्ध्नि व पलव प्रसर शयने तिष्ठिमादी

श.शे.
गी.

शो विनिवेशय शोषय मनसिज नायम् ॥४॥
मथर स्यात्स मपनय भासिति जीवय म
त मिव दासम् ॥ त्वयि विनि हित मनसे विर
हानल दय वपुष मविलासम् ॥५॥ शशिम
वि मावय मणि रशनायण मन यण केढ
तिनादम् ॥ श्रुति युगले पिक रुत मम श

सि विहरे ॥ तणा मुप कुरु शयनो यदि मामिव
नृपु मन्वगाति शूरे ॥ २॥ वदन स्रथानिधिग
लित मन्दत मिव रचय वचन मन्वकले ॥ वि
रह सिवापन यामि पयोथर रोथक मुरसिड
कले ॥ ३॥ प्रियपरिरेभगा रभस वलित मिव
लकित मतिडखापम ॥ मधुरसि कचकल

राशे
गी

तात् ॥४॥ श्लोक ॥ प्रहृष्टः पुलको करेण दिवि
अशेषैर्निमेषेण चक्रीड कृत विलोकिते धर
सुधा पाने कथा नर्मभिः श्रान्तेदाभिगमते स
न्मय कला युद्धेण यस्मिन् न भू उद्धतः सतयो
र्दभूव सरता रेभः प्रिये भावकः ॥५॥ मीलह
ष्टि मिलनकोल पुलके सीत्कार थात वशा द

मय विरादव सादम् । ६ । मामति विफल रुषावि
फली कृत मव लोकित मथुनेदम् । मीलति
लजित मिवन यने तव विरम विस्मयति एव
दम् । ७ । श्रीजयदेव कवेरिद मनपद निगदि
त मथुरिष मोदम् । जनयत रसिक जनेषु म
नोरम रति रस भाव विनोदे ॥ राग गेथार

राशे मलितः कचेथर मभस्यनेन संमोहितः कोतः॥
कामपि तन्निजापत दह्ये कामस्य वामायातिः
७८॥ वासो^{माशं}के रतिकेलि संक^{सं}सरणारेभातया । सा
हस प्राये कोत जयाय किंचिदपरि प्रारेभियन्तश्च
मा^{नि}ति स्पेदा जवनस्यली शायिलिता देविलि
रुत्कमिपते वक्षो^वत्कीलितं मत्ति पौरुष

यत्ता कलकेलि काक विक सदेता प्रथौ ताथ
रेखा सोत्ताम्य ययोथरे भ्रशापरि खेगात करेगी
दृशो र्षोत्कर्ष विमुक्त निः सहननोर्थन्यो
ययत्तातनम ॥ ५५ ॥ दोर्ध्या से यमितः प
योथर भरेणा पीडितः पाणि जैस विहोदश
नैः सताथरषदः ओणी तदे नाहतः हस्तेता

रागो
गी

श्रोत्र मपि मेरुत वीक्षयानिज गाद निरावाधारा
या स्थायीत भर्त्तका । दश । इति मनसा निरादे
ते सुरतोते सानितोत विन्नागी राधा जगाद
सादर मिदमानेदेन गोविंदम् ॥ दश ॥ राग गे
धार लालतीन ॥ ३ ॥ अष्टपदी ॥ करु यहुन
न्दन चन्दन शिशिरतरेण करेण पयोध

रसः स्वीर्णो कृतः सिध्यति ॥ ५४ ॥ तस्याः पाटल
पाणिजो कित्तमरो निश कषाये दृशो मतिर्ह
तो थरशोणिमा विललिता सस्तस्रजो मूर्ध
जाः कोचीदा मदरस्यो चल मिति प्रातर्नि
खितै दृशोरेभिः कामशोरेस्तद्वृत्तमभ्युप
सर्म्मनः कोलितम् ॥ ६० ॥ अथ कोते रति

शो-
गी-

मनसिज पाश विलास करे सभवेसतिवेषाय
जेडले ॥ ३ ॥ मरु चये रचयेत मपरि रुचि
रे सचिरे मम सत्तावे जित कमले विमले
परिकल्पय नर्मजत कमल केसवि ॥ ४ ॥
मयामदरस ललिते ललिते करु निलकमलि
क रजनी करे ॥ विस्ति कलेक कलेक ।

१॥ मृगा मदपत्र कमर मनोभव मेवाल कलश
सहोदरे ॥ १॥ निजगाद सायड नंदने क्रीदति
हृदया मेदने ॥ दयारुचन लेखित कजल
जलव प्रियलोचने प्रति कल मेजन मेजन
के रति नायक मोचने ॥ २॥ नयन करेगा
नरेगा विकामिति वास करे प्रति मेउले ॥

रा-गे
गी-

येदेव वचसि जयदे सदये हृदये ऊरु मंडने हरि
चरण स्मरण सत कृत कलि कलष ज्वर वि
डने ॥ ६ ॥ अष्टादी ॥ राग गंधार ताल ॥ ३ ॥
श्लोक ॥ वचय कचयोः पत्रे चित्रे करुष कपोल
यो र्चटय जचते कोची मंच सजा कवरी भ
रम ॥ कलय वलय श्रेणी पाणी पदे ।

मत्तानन विप्रमिन्न अम शीकरे ॥ ५ ॥ मम रु
चिरे चिकरे ऊरु मानद मानस जयज वाम
रे ॥ रति गतिने ललिते कसमा निशिखिदि
शिखिड कडामरे ॥ ६ ॥ सरसचने जचने मम
शेवर दारणा केदरे ॥ मणी रशना वसना
भरणाति शुभाशय वासय हृदरे ॥ ७ ॥ श्रीज

ग.गो.
मी.

जः ॥ ८५ ॥ पर्येको कृत नाग नायक फणाः
श्रेणी मणीनो गणो संक्रान्त प्रति विव संव
लनया विभ्रदिभ प्रक्रियाम् ॥ पादो भोरु
ह थारि वारिधि सजा मदनो दिदत्तः शतैः
काय ब्रह्म मिवाचरे नप चित्ती भूतो हरिः
पात्रवः ॥ ८६ ॥ तिर्यककेट विलोल मौलि

ऊरु नृपरा विति निगदितः प्रीतः पीतो वरो
पि तथा कथेत ॥ ६४ ॥ प्रातर्नील निक्षेपम
सुतसुरः सेवीत पीतोपके राथाय प्रकिते
तिलोका रसिति खरे सखी मेदले ॥ श्रीशते
चल मेचले नयनयो राथाय राथानवे खरे
खरे सखी वज्रोक्त जगदा नन्दाय नेदात्म

रागो
गी

न वेशे ॥ चलित द्यो चल चेचल मौलिकपोल
विलोल वसंतम ॥ १ ॥ रासे हरि मिह विहित
विलासे । स्मरति मनो मम कृत परिहासे ॥
चंद्रकचारु मयूर शिखिडक मेडल वल धित
केशाम् ॥ प्रचर प्रदेद यन रन रेजित मेडर
मदित सवेशे ॥ २ ॥ गोपकदेव विनेव वती

नरलोते सस्य वेशो हरजीति स्थान कता वथान
ललता लक्षणा संलक्षिताः प्रेम्णा कन्दलि
ताः समग्र मयरे तथा खलितौ तथा सरे
वो मथसूदनस्य ददम तेमे कटाक्षोर्मयः ॥
६० ॥ राया मथारताल ॥ ३ ॥ अष्टपदी ॥
संचर दथर तथा मथर धति मखरित मोर

श-गं. हे ॥ पीत पयोधर यदि मर मर्दन निर्दय हृदय
कपाटम् ॥ ५ ॥ मणिमय मकर मनोहर कुंड
ल मेरितगंड सुदार ॥ पीत वसन सनरात
सुति सवज स्या सर वर परिवारम् ॥ ६ ॥
विशद कदेव तले मिलिते कलि कलष भये
शमयेतम् ॥ मामपि किमपि तरेण दने

साव चेवन लेवित लोभे ॥ देय जीव मयरा
थर पल्लव मल्ल सित स्मित शोभम् ॥ ३ ॥ वि
पल पलक भज पल्लव दल्यित दल्लव सब
ति सहस्रम् ॥ कर चरणो दसि मणि गणाम्
षण्ण किरण विभिन्नत मिस्रम् ॥ ४ ॥ जलद
पटल चलदिउ विनिन्दक चन्दन विउलला

श'गे-
गी

श्रीगोदस्यते ॥ सामह्नीत्य विलज्जितसितसुधा
सुधा ननेकानने गोविंदे व्रज संदरी गणा वृ
ते यशसि दृष्टा मित्र ॥ दद ॥ अंतर्भीहन श्री
ति हृष्टेन चलन मंदम विसेसनः स्वव्याकर्ष
ण दृष्टि दृष्टेण महा मेरे ऊरेगी दृष्टो दृष्ट्यात
व ह्य सात दिविष उर्वीरुः लापते ॥ धेसः

गदशा मनसा वसयेते ॥१॥ श्रीजयदेव भ
णित मति हेदा मोहन मयुविषु शृपे । हवि
चरणा स्मरणे प्रतिसेप्रति शरण वता मनच
पम ॥ दगायाग गेथार ताल ॥३॥ श्लोक ॥
हस्त स्वस्त विलास वेशम नञ म्रुवलि म
दलदी हदोत्तारिह्योतवी हित मति हेदा

रागो-
गी-

माथीक विज्ञान भवति भवतः शक्यै कर्कश
सिद्धात्ते इत्येति केत्वा नमते स्त ससि दीर
नीर रसस्ते ॥ माकंदे कंद कोत्ता थर पर
णितले राक्ष यच्छेति यावद्भावे शृंगार सा
रसत मय जय देवस्य विष्णवचासि ॥ ५॥
श्री भोजदेव प्रभवस्य रामादेवी सत श्रीज

केसरियो व्यो इयत्तवो अयोसि वेशोरकः ॥ २५ ॥
यस्योयव कला स कौशल मन्त्र ध्यानेन यदैलवे
यत्त स्येगार विवेक तन्त्र मपि यत्कावेष ली
सागिते ॥ तत्सर्वे जयदेव पेडित कवेः ह्री
लेक तन्नात्मनः सानेदाः परिशोध येन
हृषियः श्रीगीत गोविन्दतः ॥ २५ ॥ साधी

रा.गो.
गो.

थार गीत गोविंद परिच्छेदः समाप्तः ॥ ॥

७८५
७८५

७५

यदेवस्य ॥ पद्मशरादि प्रियवर्ग कंदे श्रीगी
त गोविंद कवित्तमस्त ॥ जय श्रीविमलैर्म
हि इव मंगलकस्यैः स्वये सिंहदण्डिपि
णमदा मदित्तु ॥ भज्या पीड क्रीडा हन
कवत्तया पीड करिणाः प्रकीर्णा हरिवेर्ज
यति भजदेडो मयसिस्त ॥ ५३ ॥ इति रामो

रा. हो. कृत सकृत कामिनी ४ अरुह कलयासिवलया
गी. दिमणि भूषणं । हरि विरह दहन वहनेन वरुह
षणं ५ ऊसम सकुमार तन मतन शरलीलया स
गपि हृदि हेति मामति विषम शीलया ६ अरुमिर
निवसामित गणित वन वेतसा । सरति मधु सूद
नो मामपि नवेतसा ७ हरि चरण शरण ।

रूप मयि यौवनं १ यामिहेक मिह शरणं सखीजन
वचन वंचिता । यदन्तगमनाय निशिगमन मयि शी
लितं । तेन सम हृदय मिदमसम शरकीलितं २
सम शरण मेव वरमति वितथ केतना ॥ किमिह
विसहामि विरहा नलमचेतना ३ मामहह विधु
रयति मधुर मधुयामिनी । कापि हरमनभवति

रा.रा. रागिनी रास कली ताल चर्वरी विस्रपद ॥

२६

मेरी मति रायिका चरण रजमै रहो ॥ इति अस्या

26

ई इहे निहचे कस्यो अपने मनमें थस्यो भूलिके को

उ कछू औरद फल कहो ॥ अंतरा । अथ आभो

राः करम कोऊ करो ज्ञानद अभ्यसो सकतिके ज

तन करि वृथा देखो दही ॥ रसिक बलभ चरण

न क्षत कीने ॥ रागिनी रास कली ताल ॥
विस्मयद माई गिरि धरन के गुण गाउं ॥ इति
स्वाई मेरे तो व्रत पढ़ै निस दिन औरन रुचि उप जा
उं ॥ इत्येतदा । अथ आभोगः । विलन ओगन आ
उ लारिलेनै कहे दरसन पाउं ॥ केभ निद सदि
लगके कारण लाल चला गिर हाउं ॥

रा-रा-

२७

27

उदि वेदि मिलि सीत सौ मेरो हित वचन जिति भूलि
फेरे ॥ रसिक प्रीतम संग विहरि रस रेग सौ क्योन
इव अनेग को सवति वेरे ॥ रागिनी राम कली
ताल ^३ विसपद ॥ बेलाल तेरी पैजनीया ऊन
कैंदी ॥ इति प्रख्याई मायेवे तेरे सकट विराजेरी
ऊ गवाल लटकैंदी ॥ इत्येतरा । अथ आभोगः भईरी

कमल जरा शरण परियह महु प्रष्टि पय फल
लहो ॥ रागिनी राम कली ताल चर्वरी वि
स्रपद मानिनी मानि जिति मोन पनो करे आष
पाइन परै नाथ तेरे ॥ इति प्रस्थाई दरस जा को क
रन जगत नर से सदा सो तोर कटक तेरो वदन है
रे ॥ इत्येतदा । अथ आभोगः हो कहति ससजि

रा-रा

२८

वड़े गोपकी वेदी ॥ कुंभन दाम गिरि धरन लाल

सौ भज ओढ़ नील पेदी ॥ रागिनी राम कली

नाल ॥ विस्मय द । हो मोहन हो हारी तम जीते

इति अस्याई । नागर नट पट देख हमारे कोपन

हेतन सीते ॥ शोभन । अथ आभोगः रसिक गो

पाल लाल अवलति पर पनी कहा अनीते ॥ पर

चकोर चेशवलि गति मति रति अट कैदी ॥ आसक
रन प्रभ मोहन नागार चरण कमल वित देंदी ॥

रागिनी रास कली ताल ३ विस्रपद । हमारे

दान देरी गुजरेदी ॥ इति प्रस्थाई नित उठि आज्ञा

त चोरि दधि वेचन आज्ञ प्रदानक भेदी ॥ इत्येत

रा । अथ आभोगः अति सत रात केसे कुदोशी

रा-रा

२५

29

वरस कुमारे ॥ रागिनी राम कली ताल ३ विस्र
पद । वनत नही जसना जूकोन हैवो ॥ इति अ
स्याई । चोली चीर कसले भाजे कदित भयो चर
जैवो ॥ श्येतया । अथ आभोगः । जोहरि हमसो
ऐसी करिहोतो इह चाटन ऐवो ॥ श्रीविठल गि
रि धरन लालसो वीतनी करि चर जैवो ॥ रागिनी

मानेद प्रभु हम सब जानत तब गालबजावत रीते-
रागिनी रामकली ताल ३ विस्रपद मोहन देहो
वसन हमारे ॥ इति अष्टाई । कहैगी जाय ब्रजपति
जहके आगे करत अनोतल लारे ॥ इत्येतत् । अथ आ-
भोगा । तब ब्रज राज कि सोरनेद सन सब हिनके
प्राण प्यारे ॥ गोविंद प्रभु पीयदासी निहारी सुंदर

श-श ली ^३ विस्मयद । मनोवल्लभा योश पद कमल सु
गले सदा वस तमस त्रिविध रस भाव वलिते ॥
इतिप्रसङ्गार्थे । अथ महिमा भास वासना वासिते सा
भवत् जात निज भाव वलिते ॥ इत्येतत् । अथ प्रा
भोगः । भजत् भजनीय मति शयति रुचिरे चिरे
चरणे अगले सकल गुण सुललिते ॥ वदत् हरिश्

राम कली ताल २ विस्वपद । ग्वालिन मोरानि
वसन अणाने ॥ इति प्रस्यार । सीत काल जल
भीतर दाफो आवत नाही दयाने ॥ इत्येतरा ॥
अथ प्रभोगः । तम व्रज राज कुमार प्रवल अति
कोन परी यह वाने ॥ हम सब दासी तिसरी व्र
जपति तम वड निपट सयाने ॥ रागिनी राम क

रा-रा ३१
श्रावे स्याथि रही रास रसाभ अमेरो ॥ रागिनी रास
कली ताल ३ विसपद । हेलीन वति केजली
लारस हरित श्रीवल्लभ वनमोरे ॥ ३१ ^{इति अस्याई} श्रेया श्रेया विष
न क्षिप्रत चन दामिनि इति फल फल प्रति दोरे
इत्येतया । अथ आभोगः । करत श्रावेस विरह
विरहनी प्रति भूतल वरत कदोर ॥ पञ्च नाम

स इति सा भवतु मुक्त रपि भवतु मम देव सत जन्म
फलिते ॥ रागिनी राम कली ॥ विस्वपद ॥
श्रीमदलभ रूप सुरेयो ॥ इति अष्टाई । नख सिख
प्रति भावनके मूषण वेदावन सेपति अंग अंगे ॥ इमे
नरा । अथ आभोगः । अरस परस गिरि धरजू की
नाई ऐन मैत व्रज राज उक्तेयो ॥ पद्मनाभ देवे वनि

रा-रा

३२

३२

पद्मनाभ सत हितकीयो मारग नेह सरलिका वे
ह ॥ रागिनी रास कली ताल ३ विस्रपद ।

रुक मिनि चलन सिखावति पाउन ॥ इति प्रस्था
ई । सतकी राहै श्रेयारिया सेलति सोभा कोटिक
भाउन ॥ ३ मंतरा । प्रथमा भोगः । हुमकि हुम
कि पग थरत थरति परलेउ छेग उर लाउन ॥

मथुरेस विचारत श्री लक्ष्मन भट सत ओर ॥
रागिनी राम कली ताल ॐ विस्मयद । सखि
री सोभा रस मय भाव प्रकट करि श्रीवल्लभ वर
देह ॥ शतिप्रस्थाई । अंग अंग ब्रज वध विरहनी
व्यापी जगल सनेह ॥ श्येतन । अथ आभोगः
श्रीहेदारण्य देह प्रकटित हृदे निगल कंदरा देह-

रा-रा

३३

३३

पश्य पश्यते ॥ दृग्गोचरः कल विहार एव
स्थितिस्तदीये तद एव भूयात् ॥ रागिनी राग
कली ताल ॐ विस्मयद । नैन भरि देवि अत
भोन तनया ॥ इति अस्याई । केलि पियसों करे
भव रत वही परे अम जलति भरत आनेद मनया
इत्येतया । अथ आभोगः । वलति देखी होइलेति

हेरा वनको चेद श्रीवल्लभलवे लाउहुलराउन ॥

रागिनी रास कली ताल ३ विस्रपद । व्रजपरि

वृद्ध वल्लभे कदा तचरण सरोरुह मीतणास्य देसे

शतिप्रस्थाई । तब तदगत बालका कदाहे सक

ल निजो गगता सदा करिष्ये ॥ इत्येतदा । अथ

आभोगः । हेरावने चारु वृह दने मन्मनो रथे

रा.रा. कहत वारे वार सवन के अथार यन निर्हन के ॥ ३४ ॥
तया ॥ अथ आभोगः ॥ लेत जसना नाम देत प्रभे
पद थोम रसिक प्रीतम प्रिया वस जो जित के ॥

पिय कौ मोहि उन बिना रहति नहि एक छिनया ॥
रसिक प्रीतम रास करत जसना पास मानो निर्दन
न कीहो जयनया ॥ रागिनी रास कली ताल ५
विस्वपद । श्याम सखि रास जहो नाम उनके ॥
इति प्रस्थाई । तिस दिना प्राण पति आय हिय मै व
से जोई गावे सजस भाग तिनके ॥ एहि जग मै सार

रा-रा कस दास प्रभ निरिथर न पर वारि होत न प्रान ॥

३५

रागिनी राम कली ताल ३ षट्पदी कसजीके ॥

निपट खोटे कान्ह सति जननी कहु वात ॥ इति अ

स्थाई होत जब समदाउव करत तव सिस भाउ एको

तपाइके नैन भरि ससि कात ॥ इत्येतरा प्रया प्रामो

गः देवि रस रीतिकी प्रीति विपरीति गति मति मोन

राशिनी राम कली ताल ३ षट्पदी ॥ बोलन कोक
कला निधान ॥ इतिप्रस्थाई मम वचन सनि उदि च
लहि सखि कादि सेदरि मान ॥ इत्येतदा- अथप्राभोगः
तेव नाम सहित निकज महे पीय करत मरली गान ॥
कैलि कौतम रसिकनी प्रियस निहिदे किनि कोन ॥
मेम रजनी विसत उरु पति जनकि भयो विहोन ॥

रा-रा

३६

स्योम सेंदर रेति कहो जागे ॥ इति अस्याई रेवि वि

न श्या माल अथर अजन भाल जावक लग्यो

गाल पीक पागे ॥ अनेतरा ॥ अथ आभोग बाल

दग मगी अति सिथिल अंग सबतो तरे बोल

उर नाव नि दागे ॥ गड्यो केकन पीठ निपट विर

वल दीठ सर्वरी लालनरी पलक लागे ॥ कहिये

छाडि सेवा लगी रहो निमि प्रात ॥ जात नही विसरि
देवि ब्रजत जतन थरि समझि कहे चंद देखे कमल
विगसात ॥ इत चंचल जे लाल जस मति हरे उर कि
यसि थरति पाउ थरि सख किलकात ॥ मनहुं प्राणा
वन वादरी सुरत जिहान प्रानंद सब फूल प्रति जल
जात ॥ रागिनी राम कली ताल ४ ॥ षट् षटी-

रा-रा

३७

पदी पलटि परे पट अट पदे अभरन ॥ सिथिले अंग

अंग सबहि देखियत निमाके जागरन ॥ नवप्रिया

संग प्रहर व्यारो पलन पाए परन ॥ चतुर्भुज प्र

भुजी तिर तिरन कियो रति पति शरन ॥ ॥

रागिनी राम कली नाल ३ षटपदी ॥ मोहन ब

सन हमारे दीजे ॥ इति अष्टाई वारनै जाउ सुनौ नंद

सोचि वात काहे जीय सक वात कौन त्रिय जाके अत्र
राग रागे ॥ रास कुंभनलाल गिरि धरन पते पर क
रत कुंदी सोह मेरे आगे ॥ रागिनी रास कली
ताल ३ छटपटी ॥ भले आण भोर गिरिवर धरन ॥
इति अस्याई अरुण नैन जेभात आलस धरत उवा
मरो चरन ॥ इत्येतया अथ आभोगः पाग लट

ग. ग. गगिनी राम कली ताल ३ मलफाखता षट्पदी

३८

३८

लालन जागत रैन विहानी ॥ इति प्रस्थाई ॥

देवत पथ आविष्टो अति हारी कहे लाल रति

मानी ॥ इत्येतया ॥ अथ आभोगः कटो का

लकेहि लाल सखिन संग परब विविध कहानी

रंग अनग सरत चित आवत छनियो अथि कपिरा

नेदन सीतल गान नन भीजे ॥ अथ आभोगः कौ

न सभाव हृषा अन औसर उनवानन कैसे जीजे ॥

सुनि आविपावे वज महर जसो मति जाउ कहै अव

हीजे ॥ पसव अवला जल मोऊ उचारी दारुण आव

कैस सहीजे ॥ प्रभवल राम हमदासो तिहारी जो

भावे सो कीजे ॥ इति आभोगः ॥ ॥

रा.रा.

३५

३९

हारें आवज सभा जवि रही निकसि वैनहि पाउ ॥ वि

न रापे पति वन छुटे हमे गोकुलगाउ ॥ श्यामगा

न सरोज आनन ललित लैले नाउ ॥ सुरहि ल

गन कहिन मनकी कहो काहि सनाउ ॥

रागि रास कली नाल ३ ॥ षट्पदी । लाल रस

समे नैन आज निमि जागे ॥ ३ नि अस्थाई अति वि

नी ॥ भोरभये आप मोरे गढ़ देखन सखी सिरानी-
रसिक प्रीतम दोऊ प्रीतियो प्ररुण भए कहो क
होरे निसिरानी ॥ रागिनी राम कली तालजप ३
षट्पदी ॥ किहि मिस जस मनी के जाउ ॥ इति
प्रस्थाई ॥ सकल सख निधि सख निरखि के नै
न तषा बुजाउ ॥ इत्येता- अथ आभोगः ॥

रा-रा रि कर आरो ॥
४०

५०

साल प्रसात प्ररुणा भप रति रनके रंग पायो ॥

इत्येतया । अथ आभोगः सुंदर श्याम सभगना

प्रदपदी प्रेया प्रेया नख लत दोगे ॥ मानद कोप

नि दोर सन्नाख सरसाथ भप प्ररिभागे ॥ चत्तर

भुज प्रभ गिरि थरन प्रथिक क्ववि वेदन भक्त

दीलागे ॥ मानद सन्नाथ चाप भेट थरि रसो जो

रा-रा सरके प्रभ दरस दीजे ग्रहन कीरन छई ॥ ॥

४१

रागिनी रास कली ताल ४ षट्पदी मैया तेरे

तालको माव देवनरो आई ॥ इतिप्रस्थाई का

लि माव देवि गई दधि वेचन जातहि गयोहे वि।

काई ॥ उत्पन्नरा प्रथमभोगः दिनते हनौ दोस

लाभ भयो गाइनि वदिया जाई ॥ आईसवे छेभा

रागिनी राम कली जाल ३ षट्पदी कसजीके
मोहन जागिहों बलि गई ॥ इतिअस्याई बाल
बाल सब द्वार हाफे बेर वनकी भई ॥ इत्येतदा ॥
अथ आभोगा पीत पट करि हरसखतैं खादि दे अर
सई ॥ अति अनेदित होत जसमति देवि इति नित
नई ॥ जागे जेगम जीव पशु त्रिग और व्रज सबई ॥

श.रा.

४२

५२

आभोगः गलीजसोकरी एकजनीकी भेट भयो भ
द भयो ॥ अंकदे चली सयानी ग्वालिन हरिको वद
न फिरि हेयो ॥ प्रातही मंगल भयो सावीरी है है स
ब काज भलेयो ॥ परमानंदप्रभ साव निराखत मि
हो भव सागर केरो ॥ **रागिनी राम कली** ॥
ताल २ **षट्पदी** ॥ हो बलि बलि जोउ कलेउ

य सायकी गिरि थर देऊ जगई ॥ सति विय
वचन विहसि उदि वैदे नागारि निकट बुलाई ॥
परमा नेद सयाती ग्वालिन चली सेकेत बनाई ॥
रागिनी राम कली ताल ३ षट्पदी ॥ लाल
को दरसन भये सवेरो ॥ इति प्रस्थाई वदत ला
भ पाउंगी माई दस्यो विकैहै मेरो ॥ इत्येतरा ग्रथ

रा-रा

४३

५३

जे ॥ रागिनी रास कली ताल ॥ ङ षट्पदी ॥

जयति आभीर नाराय प्रान नाथे । जयति वज्र राज भू

षण जसो मति ललित देतन विनीत मिश्री सहाये-

इति अष्टाई जयति पात परभात दधि श्रीदामा

सेरा अखिल गोथन हृद चरे साथे ॥ इत्येतरा ॥

अथ आभोगः दोर रमणीक हृद विपिन सुभस्यत

1
कीजे ॥ इति अस्याई खीर खोड चूत अति मीठो
है अबको कोरवच्छ लीजे ॥ अंत्यरा ॥ अथ आभो
गः वेनी वडे सुनो मन मोहन मेरो कस्यो जो पत्नी
जे ॥ ओहो हथ सय थोरी को सात चूट जो पीजे ॥
हो वारीया बदन कमल पर अंतरा प्रेम जल भीजे ॥
बहुस्यो जाय विलो जमुना तट गोविंद संग करि ली

रा-रा-

४४

५५

वि सुदित भई मनहि मन कहति आये वचन भयो
प्राता ॥ इत्येतया । अथ आभोगा । नैन अर सात
अति बार बार जे भात केद सो लगि जात हरष गा
ता ॥ वदन पौक्षियो जमन जल निसों थोड़के क
ह्यो मस काइ कछु खाइताता ॥ हृथ औ ह्यौ ओनि
अधिक मिथी सोनि लेऊ सोवन पौनि पाए दता-

मेदरी केलि गुण गूढ गाथे ॥ जयति तरनि जा न
द निकट रास मंडल रव्यो तत्तना येई येई तत्तना
थे ॥ चतुर्भुज रास प्रभु विरिथरन बद्धि शुबष्ठी
विदल प्रकट व्रज कियो सनाथे ॥ रागिनी रास
कली ताल ॐ षडपदी ॥ लालहि जगाउ ब
लिगई माता ॥ इति प्रस्थाई निरावि म्हाव चेद च

श-श

४५

तनी श्रंगकीगति दीति जीयल जानी ॥ उपदि
केकन पीढ वक्र विह वल दीढ ईढ नालावी खानी
पाणि पलव प्रथर दसन सौ गहि रसी प्ररथ बेन
बोलि वचन हार मोनी ॥ मूरप्रभ प्रेक भरी प्रोण
पति नागरीन बल नागार उरह्छालि मोनी ॥
रागिनी राम कली नाल २ छटपदी ॥ जैये त

सूर प्रभु कियो भोजन विविध भोजि सौ पियो पय
मोद करि चूट साता ॥ रागिनी राम कली ताल
कं षट्पटी ॥ रायिका श्याम जन देवि मसका
नी ॥ इति अस्याई । हार विन शृणु लेख अथर
भेजन रेख नैन तेमोर तत रात बोनी ॥ इत्येतया
अथ आभोगः ॥ पाग लट पटी बनी उरह झूटी

रा-रा- व्रज प्रियनमै कौनसी नारि वह जाके तम लाल
४६
५६
प्रनराग रागे ॥ वनभोज दास प्रभ विरि थरा
काहे को करत ऊरी मोह मेरे आगे ॥ रागिनी
राम कली लाल ॐ वटपदी ॥ नैन उनीदे
भए रेग राते ॥ इति प्रस्थाई मनहु गुलाल
ऊखम पर सजनी फिरत भेग मद माते ॥ इये

हो जहो रेति जाये ॥ इति प्रस्थाई । वनी विन
गुणमाल ओह अजत भालसै उर लग्यो रोउ पी
क पाये ॥ इमेतरा । अथ प्राभोगः । प्रारक्त नै
न अति सिथिल सब अंग गति उरा मरा तरा विन
ही पलक लागे ॥ चपल चानर फीट उपटि केक
न पीट देखियत उर मोऊन खन दारो ॥ सकल

रा'रा' मन मया वैथो मोहन नैन वोनसो ॥ इति अस्याई ॥
४७
५७
गह्रभावकी सैन अचानिकत कितासो भुजरीक
मोनसो ॥ इत्येता । अथ प्राभोगः ॥ अथ स ताद
वलचेर निकटले मरली समक सर वेथानसो ॥ पाके
वे कविनै मथुरे हेसि चात करी उलरी सदनसो ॥ व
तर्भज दास पीर पातन की मिदतन औषध ओनसो ॥

नरा । अथ आभोगः प्रेम पराग पोखरी पल दल
प्रफुलित मदनल नाते ॥ सदा सवास विलास वि
लोकनि प्रकट प्रेमके माने ॥ नैसिये मारुत मेद
जन्दा वरि मिलत सदिन खवि नाते ॥ सोचे स्वर
श्याम मानिनि निज हित करिकेलि कलाने ॥
रागिनी राम कली नाल ४ षट्पदी कसजी की

श-या

४८

५४

ते चिते सि सत नरा खति केद लगा ३ सेदर श्यामस
भया मउवा नीत त रात मोयित वनीत खान भ
जन भाव जैसै जनावत वाल खरा ॥ चतुर्भुज प्र
भ गिरि थरके वाल चिनोद नेद माव देखे हाफे
दगा दगा ॥ रागिनी राम कली ताल ३ वट्ठ
दी उपमा थीरज तज्यो निरावि कवि ॥ इति प्रस्था

कैकै सख नवहरी उर अंतर आलिंगन गिरिधरसुजो
नसो ॥ रागिनी राम कली नाल ॥ छटपदी ॥
प्रेमरिया क्वाडिरे गति प्रया प्रया ॥ इति प्रस्थाई
नृप वज्रत न्योन्यो थरणी थरत पया ॥ इत्येतया ॥
अथ आभोगः कवड़े कजसौदा माहि भज पसारि
हेसि उग मगाइके उलटिउग ॥ जननी मरित मन वि

राधा रागिनी राम कली ताल ८ षट्पदी । हांछोरीव
रिक् माई कौन को किसोर ॥ इति अस्याई सोवरी व
रन मन हरन वेसी थरन काम करण केसी गति जोर
इत्येतरा । अथ आभोगः पवन परसि जात चपल हो
न देवि पियरे पटको चटकी लो छोर ॥ सुभग सो
वरी छोटी चटाते निकसि आई वेकवीली बटा कौ जे

ई कोटि मदन अशुनो बल हासो केउल तेज कृष्णो
रवि ॥ इत्येतया । अथ आभोगः विजय मोन स्या
जहै जेते दीन रहै कौ हरेदवि ॥ गिरिधर पटन रह
महिल जावत सकुच तनही बोटे कवि ॥ ईषदहा
सदसन इति निरघन वज्र सिखरस ऊचाने सुरणा
मलीला वपुका छियो पटनर मेदि विराने ॥

रा-रा' इत्येतदा । अथ आभोगः । सब चत्तगई विसरि जातहै
५०
खान पान की तात ॥ विन देखि छिन कलन परतहै प
ल भरि कलप विहात ॥ सति भासितिके वचन मनो
हर सावि मन अति सकचात ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरि
थरन लाल सेरा मदा बसो दित रात ॥ रागिनी रा
स कली ताल ॐ षट्पदी । चतुर चारु चेद वली

सो कवीलो ओर ॥ मृच्छति पाइनी खारि हाहा होमे
री शाली कहा नाउ कोहै चित वित को चोर ॥ नेददा
सि जाहि वाहि चकचौथी आउ जाउ भूल्योरी भवन
गवन भूल्यो रजनी भोर ॥ रागिनी राम कली ताल
षट्पदी । करत हो सवे सयानी वात ॥ इति प्र
स्थाई जोलों देखे नाहिन सेदरि कमल नैन मसिकात

रा-रा ५१
ल मरति का दह मोरे ॥ सति कल दास सभ लग वह
थन चरी लाल गिरि धरन सौं हाथ जोरे ॥ रागिनी
राम कली लाल ३ छटपटी । देखो मेरे भाग की स
भ चरी ॥ इति अष्टाई । नवल रूप कि सोर मूरति के
दले भुज धरी ॥ इत्येतदा । अथ आभोगा जाके चरण
सरोज गंगा प्रेभले सिर धरी ॥ जाके चरण सरोज प

साव चकोरे ॥ इति प्रस्थाई अस्तमे चरण रति व्रज
जवति भूषणो कमल लोचन नंद नृपकि सोरे ॥ इत्ये
तरा । अथ प्रामोदः । मोनि मेरो कस्यो अति साल र
सरीति क्यो करावति सावी वद्धनि होरे ॥ मिलेकिति
थाइ अव ऊंवर चूरारत्न रसिक वर भूषणल चित्त तो
रे ॥ नवरंगा ऊंज महेत वनो महित नाथ ऊणीत क

रा.रा. रहती करि कोति ॥ अतः हम पै कौं सही परति है
५२
५२
मणि मानिक की होति ॥ बुद्ध विवेक वचन चा
नरी सर्वस लियो बुराय ॥ सूरदास प्रभु के गुण
औ गुण का सौ कहिये जाय ॥ रागिनी रास क
ली ताल गीत सटपटी । यत यह राधिका के
चरन ॥ इति अस्याई । सभरा सीतल अतिस

रसत सिलास नियेत तरी ॥ जाके वदन सरोज निर
खित आस सगरी मरी ॥ सर प्रभुके संग विल सत स
कल कारज मरी ॥ रोगिनी राम कली ताल ३ घट
परी । गोपाले माई वारे हीनै देव ॥ इति प्रस्थाई ॥
जानौ नही कौन पैसी बिचारीके कल छेव ॥ इत्येत
रा । अथ आभोगः कवजेक इरते माखन खाते सुनि

रा-रा-

५३

ल ^{गीत} षट्पदी । यत्न यह रायिकाके चरन ॥ इति

प्रस्थाई । स्वभरा सीतल अति सकोमल कमलके

से चरन ॥ इत्येतदा । अथ आभोगः । नखवेद चा

रु प्रनूप राजत विविध सोभा धरत ॥ ऊर्णित नू

शर ऊँज विहरत परम कौतुक करत ॥ रसिक ला

ल मनमोद कारी विहर सागर तरत ॥ विवस

कोमल कमल कैसे वरन ॥ इति श्रेतरा । अथा
आभोगः । नखचंद्रचारु अतृप राजत विविध
सोभा धरन ॥ ऊणित नूपुर केंज विहरत परम
कौतुक करन ॥ रसिक लाल मन मोदकारी वि
हर सागर तरन ॥ विवस परमानंद छिनछि
न श्यामजीके शरन ॥ रागिनी राम कली ता

रा.रा. ग्राम जीतो बोधि अपनी परत ॥ सुरके प्रभ तरन
५४
५५
तारन राखि अपनी शरन ॥ रागिनी राम कली ता
ल ३ घटपदी ॥ बहे जोत बहि मान यरि आवे ॥
इति अष्टाई । स्नेह श्याम बद्धि सन्नाह कै अंबज
वदन दिखावे ॥ श्येतया । अथ आभोगः । तब
लग मान करु कोऊ कैसे जव लग बह दस नन

परमा नेद छिन छिन श्याम जीके शरन ॥ ॥

रागिनी राम कली ताल ^{गीत} छद्मदी । बहि बहि

वात लागी करन ॥ इति अस्याई । श्याम सेदर मद

न मोहन आप तेरे चरन ॥ इत्येतया । अथ आभोगः

उदिस उपर विकर कूटे विकर उपर छरन ॥ काम

को दल साजि आई आउ देदे लरन ॥ विहर को से

रा-रा' किति रुन रुन वानी ॥ शंभुतया । अथ आभोगः
५५
५५
सुतके कर्म गावति आनंदभरि वाल चरित्र जानि
जानी ॥ अम जल वंदराजे वदन कमल परमन
द सरद वराखानी ॥ पुत्र सनेह बुचात पयो थर
प्रसूदित अति हरषानी ॥ गोविंद प्रभु बुट रुन
चलि आप पकरि रई मथानी ॥ रागिनी राम

हि पावे ॥ दृष्टि परमेन मधु कर तिहि किन सहज
सरोज दिधावे ॥ त्रिभुवन मोऊ होउ वदै जवति
आरज पणहि दृढावे ॥ ऊभन दास प्रभु गोवर्धन
थर कुल मरजादा फावे ॥ रागिनी राम कली ता
ल ॐ षट्पदी । अहो दधि मयनि घोष की रानी ॥
इति प्रस्थाई । दिव्य वीर पहरे दखिन को करि किं

श-श

५६

56

प्यारी तनतै ॥ रसिकटरोजिति दसा श्यामकी कव
हे मेरे मनतै ॥ शशिनी शम कली नाल ^३ घट
पही । चरण कमल की चेरी तेरी छाउझ लालनेद
के ॥ केसोहे दोन कहा किति लीयो दीयो न कवहे
वचन वदन अर विदके ॥ देखत साखा साखी जन
सगरी चरित चपल ब्रज चेदके ॥ लालनस ऊचत

कली ताल ॐ षट्पदी । लटकत आवत केज भव
नै ॥ इति अस्थाई । छरि छरि परत रायिका ऊ
पर जागर सिथिल रावनै ॥ इत्येतया । अथ आ
भोगः । चोकि परत कवड़े मारग वित्त चले सुरो
य पवनै ॥ भण्ड सास भरम रायाके सकुच त
ह्यो सरवनै ॥ आलस मिस मारे नही नहेने कुन

रा. रा.

५७

57

शोभतया । अथ आभोगः ॥ स्नेह प्रणाम कमल
दल लोचन हमहै दासी तिहारी ॥ जो कछु कहो
सोई हम करिहै चरण कमल परवारी ॥ अंग अंग
केपत मन मोहन विलती सनद हमारी ॥ स्वर
दास प्रभु रासिक सिरो मति तम जीते हम हारी ॥
रागिनी रास कली ताल ~~बटपदी~~ ॥ चर्चरी ।

येवरापे चत पारन पावन विविध अट पटे फेटकी ।
मटकी खसत हसत सब ग्वालनि निरावति हारे
छेदके ॥ रसिक सदा मन वसो विविध गुण रस नि
धि आनंद केदके ॥ रागिनी राम कली ताल ३ षट्
पदी ॥ हमारी येवर देखो मराही ॥ इति प्रस्थान
लेकर चीर कटम पर बैठे हम जल मोक उचारी ॥

रा. रा. दिवङ्मनक सुत वासना भेरा भव जलधि तरणो ॥ वद
५८
५८ न हरि दास इति निज वरण मात्र कृत गोकुला थीश
५८ पद कमल वरणो ॥ रागिनी राम कली ताल
षट्पदी । चर्चरी । जयति राधिका रमण वरचरण
परिचरण इति वल्लभा थीश सुत विदलेशो ॥ इति
स्याई ॥ दास जन लौकिका लौकिके सर्वथा कैवलि

रुचिर तरु वल्लभा दीश चरणो ॥ इति प्रस्थाई । प्रस्तुते
सर्वदा संस्था कति जगन्मोहने हृदि हता विहित कर
णो ॥ इत्येतया । अथ प्राभोगाः विहित माया वादवा
दि देव जादि जन संग ज नितात्त जनक मति हरणो-
प्रविल साधन रहित दोष शत कलष मति विमति
भर भरित निज दास शरणो ॥ अजसा कामको पा

रा-रा

५१

59

विद्यमसगति निज वलेशे ॥ रागिनी रास कली ता
न ॐ षट्पदी ॥ श्रीगोकुल नाथ निज वप्रथ
स्यो ॥ इति प्रस्थाई । भक्त हेत प्रकटे श्रीवल्लभ ज
गतै निधिरज हस्यो ॥ इत्यंतरा । अथ आभोगः ॥
नेद नेदन भय तव विरि गोप ब्रज उदस्यो ॥ नाथ
विदल सवनकैके परम हित अन सस्यो ॥ अति प्र

तो दयति हृदय देशे ॥ इत्येतत् । अथ आभोगः ॥ स्या
पयत मानसं सततं कृतं लालसं सहजं स्रव मातु चि
रूप देशे ॥ भालगतं तिलकं मृदादिशोभासहितं
मस्तका वद्धं सितं कलकेशे ॥ सहजं हासादिभूतं
वदनं पेकजं सरसं वचनं रचना पराजितं स्वदेशे ॥
अखिलं साधनं रहितं दोषं शतं सहितं मतिं दास ह

रा.रा.
६

60

गाय प्रणव भव त्रिभिर्नादि प्रपन्नो कस्यो ॥ दसमा
यव ज्ञान देवे चरण शरण पश्यो ॥ रायिनी राम
कली ताल वदपदी ॥

रा.रा. ६३
खाल वाल खिलन कौ गोरे भन हूँ ॥ ब्रज ज
न सब हाँपी माव देवन अति आरत सब को ॥
उहि बैठे लपगोद जसोदा सेदर सन तिहे लो ॥
रसिक प्रीतम लागि गये जननिके मोगत रोटी रो
३ ॥ रागिनी राम कली ताल ३ अष्टपदी ॥
दग मग चलति अरु रही भोति ॥ इति अष्टपदी

रागिनी राम कली ताल ३ अष्टपदी ॥ भोर
भयो जागोहो ललना कहा तम अजहं रहेहो सोर
इतिअस्थाई पीओ थार अपनी थोरीकी जैसे देह
बल होइ ॥ इत्येतरा अथ आभोगः वैनीगुहे देउ
दग अजतन मसि बिडका मख थोर ॥ हसत वदन
ह सदन निहारौ नान्हो नान्हो दतियो दोइ ॥ देखत

रा-रा

६४

64

नेद कुमार सरत सेवा लीने सरद विमल की रानी-

कल दास गिरिधर पियके सेवा अथर सधारस

माती ॥ रागिनी राम कली ताल ७ अष्टादो-

मवालिन पिछवा रेकै बोल सुनायो ॥ इति अष्टा

ई । कमल नैन हरि करत कलेउ कौरन मखलौ

आयो ॥ इत्येतदा । अथ आभोगः । मैया एक गा

तवनि केजते राधा भोमिति प्ररुणा उदैवर जाती
उत्पेतरा । प्रथमामोगा । रतिकी कलिसमिदि
मृग नैनी बार बार मस काती ॥ बदन जोतिने
सुनिरी भोमिति मेदत उड पति कोती ॥ निसके
चिन्ह प्रकट देखि यत हैं काम केलि कुल काती ॥
प्रीतम प्राण रतन सेषट कुच भेटि जग ईछाती ॥

रा-रा

६५

65

नीगवालिन उलटि अक गिरिथर पिय पायो ॥

रागिनी राम कली ताल ३ प्रष्टपदी ॥ मोखन

तनिक देरी माय ॥ इतिप्रस्थाई तनिक कर परत

निकरोटी मोगत चरण चलाय ॥ इत्येतया । प्रथया

भोगः । कनक भूमि परतनि करेषा करत पकरौ

थाय ॥ केपियो गिरिसेस सेक्यो दधि हेत प्रकलाय-

यवन चार्दे वस्त्रा झाड़े वसायो ॥ वेन नल ईल ऊ
द नहि लीनी अरवराय कोउ साखान बुलायो ॥ च
क्रित नैन चहूँ दिस चित वत सत्य इहै कियो सप
नो पायो ॥ फले अंगन मातर सिकवर विभवन हर
रस कत्रनि छायो ॥ मिलि बैठे सेकेत सदन मै
विविध भोति कीनो मन भायो ॥ परमानेद सया

रा-रा ६६
66
चोरि मन मोखन जो मेरे धन होरी ॥ शोतरा ॥ अथ
आभोगः ॥ बोधो कंचन बिभ कलेवर उभय भजा द
रा शरी ॥ राखो कटिन कदोर ऊचन विच सकेन
कोउ छोरी ॥ अथर दमत तिरोंरस गोरस कुवेन का
ऊ कोरी ॥ काम देउ देखे परचर को नाउन लेइव
होरी ॥ तव कुल कोति आनि तिरछी भई तमा अ

मेरे मत के तनिक मोहन लागो मोहि बलाय ॥ तनि
क सख परत निक वतियो बोलत है तनराय ॥ जस
मती के शणा जीवन थन लीयो उरल पदाय ॥ नेद
ऊवर गिरि थरन ऊपर सूर बलि बलि जाय ॥
रागिनी राम कली ताल ३ अष्टपदी ॥ आज ह
रि पकरा पाए चोरी ॥ इति अष्टपदी लेखायो चोर

रा.रा.

६७

कोरे लगि देख्यो मेरी छात न आयो ॥ बेनीकी कर
गहरी चामरी चुचट माऊ दरवायो ॥ मत रोवो तम
सौ कौन कहत है लेउ छंवा झल रायो ॥ श्रीमखनै
उचरि गई देदतियो नवहेसि केठ लगायो ॥ परमा
नेद प्रभु प्राण जीवन थन विसद विमल जस गायो ॥
रागिनी राम कली ताल ^{गीत} सुष्टपरी । मोहि द

पराय किमोरी ॥ शिव पर हाथ थराइ मूर प्रभुसो
च सौच सिर छोरी ॥ रागिनी राम कली ताल ३
अष्टपदी । माखन चोररीमें पायो ॥ इति अष्टपदी
जैयत कहो जान कैसे पैयत वज्रत दिन नही लायो
इत्येतदा । अथ आभोगः । होज कहति ही होत कहा
है नित उहि भाजन लगन कुछायो ॥ वज्रत वार

रा-रा

६८

68

श्रीजसनाजी तिहारो दरस मोहि भावै ॥ श्रीगोकु
 लके निकट वसत है लहरन की छवि आवै ॥ सख
 करनी डख हरनी श्रीजसना जो जत प्रात उठि न्हावै-
 मदन मोहन जूकी खरी पियारी पटरानी जूकहावै-
 हंस वनमै रास ख्यो है मोहन सरली बजावै ॥ सूर
 रास प्रभ तिहारो मिलन के वेद विमल जश गावै ॥

धि मयन देव लिगई ॥ जाउ बलि बलि बदन उप
र छाडि मया नीरई ॥ इतिग्रस्याई लालेदेजे नव
नीतलौंदा आरि कि तत मढई ॥ इत्येतया । अथा
भोगः सतेहेति विलोकी जस मती प्रेम पुल कित
भई ॥ लेउ छंगल गाय उरसौ प्राण जीवन जई ॥
बालकेली गोपालकी व्रज आस करन नितनई ॥

रा-रा

६२

69

रि सजन की तो प्रथम हे मंत के मास ॥ एवर होइ
नेद सत मेरे व्रत दासों इहि आस ॥ तव ही चीर ह
रे हरि नागर चढ़ि कदम की शरि ॥ परमा नेद
प्रभु वर देवे कोउ यम कियो मरारि ॥ रागिनी
राम कली ताल ३ अष्टपदी । ग्वालिति अर्पन
वीर लेइ ॥ इति अष्टपदी । जलनै निहारि निकट

रागिनी राम कली ताल ३ अष्टपदी । हरि जस गा
वति चली ब्रज सेदरि श्री जसना के तीर ॥ इति अष्टा
ई । लोचन लौने बाह जोटि करि अवगति कुल कत
वीर ॥ इति अष्टा । अथ आभोगः । वेनी सुथिर चारु
कोथेपरे कटि तट अंबर लाल ॥ हाथनि कूल लीये
इलीया भरि अरु सत्ता मणि माल ॥ जल प्रवेश क

रा-रा- स्वरसुभावहमारोक्त उर पति हो काम भय ॥ के
सीये भोति भजे कोऊ मो जेते सवे संसार जय ॥
रागिनी राम कली ताल ३ अष्टपदी ॥ समि
रो श्रीविटलेश कुमार ॥ इति प्रस्थाई । अति प्र
गाथ प्रणारभव निधि भयो चाहो पार ॥ इत्येत
रा । अथ आभोगः । मैवलि रहत करुणा सिंधु

कै होउ कर जोरि कै सोस देइ ॥ इत्येतरा । अथ आ
भोगः । कत हो सीत सहन ब्रज सेदरि होत असि
त कस गान सवे ॥ मेरे करे आनि पहिरो पट इत
नो अंग विधि होत अवे ॥ होअंतर जासी जानत
सबन कीकत उरा वत लाज के ॥ करि हो एत
काम कृपा करि सरद समै ससि रान के ॥ सेतन

रा-रा-

७१

7/

कोमल सदाचित उदार ॥ गोकुलेश हृदे वसो म
ममल पाल निहाल ॥ माल तिलक नत जीतक
हे परी जदपि प्रकार ॥ श्रेत भक्तन दीयो धीरज भ
ए पद दानार ॥ चार जगमै विसद कीरति भक्त
हित अवतार ॥ नव किशोर कल्याणके प्रभुगा
उे वारे वार ॥ रागिनी राम कली नाल । अथ

श-श

७२

72

गोप गोपीनवल प्रेम राति वेदिना तट मदिन रहत
जैसे चकोरी ॥ लहरि भावरि ललित बलका स
भग ब्रज बाल ब्रत हरना रास फलदा ॥ ललित
गिरि वर थरत प्रीयक लिरनेदिनी निकट कस द
स विहरत प्रवलदा ॥ निरावि हरवि ब्रज जवनि
घोष मगारि ॥ यकित जित तित प्रमर मनि रात

२
रागिनी राम कली ताल ४ अष्टपदी ॥ नमो नति
न नया परम प्रतीत जग पावनी कल मन भावनी
रुचिर नामा ॥ इति अष्टपदी श्रीविल सख दशनी स
व सिद्धि हेतु श्रीराधिका खन रति करन श्यामा ॥
श्वेतरा । अथ आभोगः । विमल जस वन नवका
ननो मोद पुन पुलिन अनिरम्य प्रीय वज्र किशोरी ॥

रा.रा. तेज उतारि ॥ केहसो पजनील माणि मय मानरवी
७३ से वारि ॥ नील गिरि वर गारल मानों लाय लई म
73 दनारि ॥ वदन रजतन श्याम मेरित शोभ इहि अनु
हारि ॥ मनहुं येग विभूत राजत शोभ सोई मधुस
रि ॥ विदस पति जस मति के आगे असन कौ करे
आदि ॥ सूरदास विरेचि जाको जपत जस मात व्यादि-

नेद लाल निहारि ॥ विन वयन सिरके सलट चड़े दि
सा छटकी जारि ॥ सोस पर जानो जटा थारि सिस
रूप कियो विप्रारि ॥ रुचिर रचित ललाटके सारि
विंड सोभा कारि ॥ रोस मनज नदीय लोचन रहे
विप्रजन जारि ॥ कुटिल हरित लहिये हरिकें सभ
ग शरि प्रन सारि ॥ इसजन रजनी सखायो भाल

श-श

७४

७५

य ॥ उरत लालन ऊलत पलना खरेदेत ऊलाय-
जमला अर्जन तोरि नारे हरे प्रेम वढाय ॥ ऊढक
नात पलाम पलव देऊ देत दिवाय ॥ कीर पिंजरा
देत अंगरी लेत श्याम भजाय ॥ वका सरकी चौच
फारी दृष्टि अवरज लाय ॥ विनाही एक सदनेमै
हरि नेऊ धरत न पाय ॥ अचा सर सख पेदि निक

रागिनी राम कली जाल ३ अष्टपदी ॥ बलि व
लि चरित्र गोकुल राय ॥ इति अस्याई । सब नल
को पान कीनी पीवत ह्य सिराय ॥ इमेतरा । अ
य आभोगः । हतनाके प्राण सोवि रहे उरल पदा
य ॥ कहति जननी ह्य जगत लोकि कहु बन
लाय ॥ विणा वर्त अकासतै राहि सिलाप दक्यो आ

श-श-

७५

75

लागत पाय ॥ चोष नारिन सेग मोहन रच्यो रास व
नाय ॥ कहति जननी व्याहकी तव लजत वदन उ
राय ॥ वृषभ भजन हतन कैसी हन्यो पुच्छ फिया
य ॥ भजन सावन समेत मोहन देवि व्याई गाय-
सेस सहसा कहिन आवे अनेक रसना पाय ॥ ए
करसना सुर कहा करे प्रेग प्रेग नित भाय ॥ ॥

से बालवक्षजिवाय ॥ हरे बालक वक्षन वक्षत
हेत दोरी माय ॥ फूटि पसु जब रहत बतमें डुम
ति फूटत जाय ॥ लिख्यो हारे नाग कारो देवि
श्याम उग्राय ॥ निर्ते काली फणाति ऊपर सप्त ता
न वजाय ॥ थर्यो गिरि वर दोहनी करत बाहे
पियाय ॥ सकट भंजन प्रसन्न कुच जग कहिन

रा-रा

७६

76

कौ उदिभ जोगे माति मेरी निहोर ॥ लेहे ललन
बलाउ तेरी खोरि अंवल थोर ॥ वदन चंद विलो
कि सीतल होत हिरदो मोर ॥ वैदि जननी मोदजै
बगलारो गोविंद थोर ॥ रसिक बालक सहज ली
ला करत मोखन चोर ॥ रागिनी राम कली ता
ल ३ अष्टपदी । मानहु वात लालन मेरी ॥

राशिनी राम कली ताल ^{गीत} अष्टपदी ॥ हाहाले
उ एको कोर ॥ इति अष्टपदी । वज्रत वेर भई है भू
खे देवि मेरी ओर ॥ इत्येतरा ॥ अथ आभोगः ॥
मेलि मिथी हय ओत्योपी औकै है जोर ॥ अबही
खिलन देखै है तेरे ग्वाल भयो अति मोर ॥ जयो पे
छी इम इम निप्रति करन लागे मोर ॥ खिलिखे

रा.रा. मेघान उदयो सूरज कमल विकास ॥ माइके स
७७ नि वचन हेसि उर आइल गेणाल ॥ कीयो भोज
न दीयो अति सावरसिक नैन विमाल ॥ रागि
नी राम कलो ताल जीत अष्टपदी । विलज मद
न सेंदर अंग ॥ इति अष्टपदी । जवति जन मन
निरति उपजत विविध भाव अनेग ॥ इत्येता ॥

इति अस्याई । करो भोजन रोस भूलो हो जमैया तेरो
इत्येतया । अथ आभोगः । हथ दथ नवनीत चूत
एक परु सियाबी प्यार ॥ कहा लोटत थरनि में मेरे
लाल होति प्रवार ॥ गोद वै हो होति बाऊं गाउं तेरे
गीत ॥ खिलि बेकों तोहि बोलत ग्वाल तेरे मीत-
कहौ जाकों ताहि देखौ वैदे तेरे पास ॥ करौ दथि

श-श- प्रलोकिक बाल लीला कौञ्जेन जानी जाइ ॥ मृग
७८
७८
तासौ मरु साव रसदेत रसिक मिलाइ ॥ रावि
७८
नी राम कली ताल चर्वरी ताले । व्रजानेदके
दबोष पति भाग्य भवि जाते ॥ इति प्रस्थाई । रसि
क वर गोपिका पीत रस माननेतव जय तमम ह
शि स्वजाते ॥ अवे । इत्येतत् । अथ प्राभोगः । रुचि

अथ आभोगः । पकरि वच्छरा ऐच्छै चत अपनी दि
स करजोर ॥ कवड़े वच्छले भजत हरिकों जवति
जनकी ओर ॥ देवि परवस भए प्रीतम भयो मन
आनंद ॥ मैंन आकल भई व्याकल गई लाज अमेद ॥
कोउ देखति गहतिको उह सत छाडति गेह ॥ कर
ति भाया अपने मनको प्रकट करि निज नेह ॥ अति

रा.रा. निहित निज वाङ्मयति मन्त्र राज राज इव रुचिरे ॥ वि
७५
२१
रुह विरहानले चारु प्रस्फुर चलत शीकरे रूप शमय
रुचिरे ॥ प्ररुण तरला पोगा शर निहत ऊल वधूध
ति तव विलोचन सरोजे ॥ मम वदन स्रष्ट मासरासि
विल सत्त सतत मलस गति निर्जित मनोजे ॥ नेद
गे हाल वालो दिनस्वी राग सैक संहृद स्रष्ट वृत्त ॥

१८२ हास गाल दमल परि मल लव्य मधुप कुल म
वि कमल सदने ॥ अमृत चय गर्व निर्वीसना थर
सिंध पायय मनो जाति शमने ॥ स्मित प्रकटित
चारु दंत रुचि वदन विध कौमदी हन निखिल
तापे ॥ विलसलिलता हय कनक कल सदयो
मारकत मणि विवश्यापे ॥ सुभगा सुसखी केद

रा. रा.

८०

८०

ह जयति हत भाव चित्ते ॥ जो वसी मेतिनी विमुक्त
घट्टेण केल निनद गार्जित स्व मिह सतते ॥ वचन
करुणा कृत दृष्टि दृष्टी रेग नव जलद मणि करु स
हसिते ॥ रागिनी राम कली जाल चर्वरी
जयति श्री बलभ सवन उदरणा विभवन फेरिनेद
के भवन की केलि होनी ॥ इति अष्टाई ॥ इष्ट

ब्रज वर कुमारिका बाहु हाट कलना सतत मा प्रयत्न
कृत लक्ष ॥ ब्रज स्नात शृणु रसिकता शृणु गोपना
निशय रुचिर लाप लीले ॥ तादृशी क्षण जनिता
कुसम शर भाव भर प्रवृत्तिषु प्रकट तर निखिले ॥
रुचिर कौमार चापल जय व्रीडया बलवी हृदय मृ
दुशमे ॥ प्रकट यन्त्रिज नावर शरवयै रसम शर सि

रा-रा-

८१

81

नकसे भक्त कौस नेदसे याहीनै वसकीयो ब्रह्म रा
सी ॥ मनहु इंदवजीति कस सौकरी प्रीति निरा
मकी चलिनोति अति विवेकी ॥ रहित अभि मा
नै वडे सन मोनके शील अरु दोन गोविंद देकी-
सदा निर्मल बुद्धि अष्ट सिधि नव निधि द्वार सेवत
जहो भक्ति दासी ॥ राम राउ गिरिधर जाजोति आ

गिरि वर यरण सदा सेवत चरण द्वार चारो वरण
भरत पौनी ॥ इत्येतदा । अथ आभोगः । वेदपथवा
स सेरुन मोन दास से ज्ञान को कपिल से कर्म जोयी
साथ लक्ष्मन निषन मद्र व्रज राज प्रकट सखरसि
मनो डेड भोगी ॥ सिंधु सम रोभीर मिलन रेग
नीर प्रीतिको जल हीर व्रज उपासी ॥ थोन को स

रा. रा. ननु जन्ताये ॥ इत्येतया । अथशाभोगः ॥ दृष्टित
८२
माया वाद वर्ति वदत येसि विहित निज दास जनप
द पाते ॥ अष्टि पय कयन रचित नेक स ग्रेय म
थित भागवत पीयूष सारे ॥ रास प्रवती भावसत
त भावित हृदय सदय मानस जनि तमो दभारे ॥
निज चरण कमल थरणो परि क्रमण कृति मात्र

पावित वितत तीर्थ जाले ॥ कसल सेवन विहित श
रण गत शिखण क्षणित सेदेह दासै कपाले ॥ निज
वचन पीयूष वर्षणो वित सतत साहित्य प्ररुष जन
भक्त्युक्ते ॥ विविध वाचो शक्ति निगम वचनोदि
नैरपिच हरित दुष्ट जन उरुक्ते ॥ ईदृशे सति शि
खसि सर्वदा बलभे सकल कर्तारि दयालौ ॥ केवप

श-श रि देवता भवति हरि दास के सकल साथन रहित

८३

जन कृपालो ॥

83

रागिनी रास कली ताल ॐ जसनाके पद ॥ जस
नसी नाहिकोउ औरदाता ॥ इति प्रस्थाई ॥ जेउन
की सरण जातहैं दोरिकें नाहिकोतेहि छिन करि
स नाथा ॥ इत्यंतश । अथ प्रभोगः ॥ एहि प्रणामो
नरसाखो नरसना एक सहस्र रसना कौन दई विधा
ता ॥ गोविंद बलि तन मन धन बारनै सबनकी जी

श-श

८५

वन इनहीके हाथा ॥ रागिनी राम कली नाल
जमनाके पद ॥ श्याम सेरा श्याम कैर हीरो जसने
इति अस्थाई ॥ सरत अम विडुतै मिथ सीवहि चली
मानो आनर आली रहीन भवने ॥ श्येत रा । अथ
आभोगः ॥ कोटि कामहि वारों रूपनैननि हारों
लाल गिरिथरन सेरा करत रमने ॥ हरषि गोविंद

रागिनी रास कली ताल ॐ जसनाके पद ॥ जस
नसी नाहिकोउ औरदाता ॥ इति प्रस्थाई ॥ जेइन
की सरण जातहैं होरिकें नाहिकोतेहि छिन करि
स नाथा ॥ इत्यंत रा । अथ प्राभोगः ॥ एहि गणगो
नरसाखो नरसना एक सहस्र रसना कौन दई विथा
ता ॥ गोविंद बलि तन मन धन बारनै सबनकी जी

श.श.

८६

86

करै गोविंद जसना की जापर कृपा सोई बलभक्त
ल शरण आयो ॥ रायिनी राम कली ताल ॥
जसना के पद ॥ चरण ऐक जरेण जसना देनी
इति प्रस्थाई ॥ कलि जरा जीव उदरत कारण
काटत पाप अवधार पेनी ॥ इत्येतरा । अथ आभो
गः ॥ शरण प्रति शरण यह आय भक्त न नेह सकल

प्रभु देवि इनकी और मानो नव डलहनी आईग
वने ॥ रागिनी राम कली ताल ॐ जसुना के पद
जसुन जस जगत में जोई गायो ॥ इति अष्टाई ॥
ताकी आसक्त कै रहत है प्राण पति नैन में बैन मे
रस जो छाये ॥ इत्यंत रा । अथ आभोगः ॥ वेद
प्रमाण की बात यह प्रगम है प्रेम को ऊन पायो ॥

राधा

८७

87

मन मोहन प्रियके संग भक्तन की कैज भीरे ॥ स्त्री
न स्वामी गिरि धरन श्रीविदलता विना नै कनही
थरत थीरे ॥ रागिनी राम कली ताल जस
नाके पद ॥ जोई सख जसना यह नाम आवे ॥ ३
तिअस्थारि ॥ तारुपर कृपा करत श्रीवल्लभ प्रभु
सोई जसना जीको भेद पावे ॥ इमेतरा ॥ अथ

यह सबकी होज सेनी ॥ गोविंद प्रभु विना रहत न
हि एक बिना अतिहि आनंद चंचल जो नेनी ॥ रागि
नी राम कली नाल ॐ जसना के पद ॥ थाइ के जा
इजे जसना तीरे ॥ इति अम्याई ॥ तिनही की महि
मा कहो लौ वर नीये जाई पर सत प्रेम प्रेरा नीरे ॥
इत्येतरा । अथ आभोगः ॥ तिस दिन के लि करत